सत्यनारायण जी की कथा PDF

एक बार विष्णु भक्त नारद जी ने भ्रमण करते हुए मृत्युलोक के प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार भिन्न–भिन्न प्रकार के दुःखों से पीड़ित देखा। इससे उनका संत हृदय द्रवित हो गया और वे अपने परम आराध्य भगवान श्रीहरि की शरण में हरि कीर्तन करते हुए वीणा बजाते हुए क्षीरसागर पहुंचे और स्तुति में कहा, 'हे नाथ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मृत्युलोक के प्राणियों का कष्ट दूर करने का कोई छोटा सा उपाय बताएं।' तब भगवान ने कहा, 'हे वत्स! आपने विश्व कल्याण की भावना से बहुत सुन्दर प्रश्न पूछा है। इसलिए आपका धन्यवाद। आज मैं तुम्हें एक ऐसा व्रत बताता हूं जो स्वर्ग में भी दुर्लभ है और महान पुण्य देने वाला तथा मोह के बंधन को काटने वाला है और वह है श्री सत्यनारायण व्रत। इसे विधि–विधान से करने से व्यक्ति सांसारिक सुखों का भोग कर परलोक में मोक्ष प्राप्त करता है।

इसके बाद भगवान विष्णु स्वयं एक बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर उस गरीब ब्राह्मण के पास गए और बोले, 'हे विप्र! भगवान सत्यनारायण जी मन की इच्छा के अनुसार फल देने वाले हैं और जो भी सच्चे मन से भगवान सत्यनारायण की पूजा करता है, उसके जीवन के सभी कष्ट नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत में उपवास का भी अपना महत्व है, लेकिन उपवास का मतलब सिर्फ खाना न खाना नहीं समझना चाहिए।

व्रत के समय मन में यह विश्वास होना चाहिए कि आज श्री सत्यनारायण भगवान हमारे साथ विराजमान हैं। इसलिए घर के अंदर और बाहर साफ–सफाई रखनी चाहिए और श्रद्धा और विश्वास के साथ भगवान की पूजा करके उनकी मंगलमयी कथा सुननी चाहिए। शाम के समय की जाने वाली यह व्रत–पूजा अधिक विस्तृत मानी जाती है।

साधु ने भी है घटना राजा के मुख से पूरे ध्यान से सुनी परंतु उसे अभी विश्वास नहीं था और भरोसे की कमी थी। वह कहता था कि संतान प्राप्ति पर वह सत्यव्रत की पूजा करेगा। समय बीतने पर उसके घर एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ। जब उसे उसकी पत्नी ने व्रत की याद दिलाई तो वह कहता है कि जब कन्या का विवाह होगा तो मैं उस समय व्रत करूंगा।

समय आने पर कन्या का विवाह हो गया लेकिन उस वैश्य ने व्रत नहीं किया। वह अपने दामाद के साथ व्यापार के सिलसिले में गये थे। उन्हें चोरी के आरोप में राजा चंद्रकेतु ने अपने दामाद के साथ कैद कर लिया था। पिछले घर में भी चोरी हुई थी. पत्नी लीलावती और पुत्री कलावती को भीख मांगने पर मजबूर होना पड़ा। एक दिन कलावती ने विप्र के घर श्री सत्यनारायण का पूजन होते देखा और घर आकर अपनी माँ को बताया। फिर अगले दिन माता ने भक्तिपूर्वक व्रत और पूजा की और भगवान से अपने पति और दामाद के शीघ्र वापस आने का वरदान मांगा।

श्री हरि प्रसन्न हुए और उन्होंने राजा को स्वप्न में दोनों कैदियों को रिहा करने का आदेश दिया। राजा ने उसे धन-धान्य तथा प्रचुर द्रव्य देकर विदा किया। घर आकर सत्यव्रत ने जीवन भर पूर्णिमा और संक्रांति मनाई, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें सांसारिक सुखों का आनंद लेते हुए मोक्ष की प्राप्ति हुई।

इसी प्रकार राजा तुंगध्वज ने वन में गोपगणों को भगवान श्री सत्यनारायण की पूजा करते हुए देखा, लेकिन प्रभुता के नाम पर चूर राजा न तो पूजा स्थल पर गये, न उन्हें प्रणाम किया, न ही दिया हुआ प्रसाद ग्रहण किया। उसे। भी नहीं किया. परिणाम यह हुआ कि राजा का पुत्र, धन-धान्य, घोड़े-मवेशी सभी नष्ट हो गये। राजा को अचानक एहसास हुआ कि इस विपत्ति का कारण भगवान सत्यदेव का अनादर है। उसे बहुत दुःख हुआ.

वह तुरंत जंगल की ओर चला गया। बहुत समय व्यतीत करके गोपगणों को बुलाकर भगवान सत्यनारायण की पूजा की। फिर उनसे प्रसाद लेकर घर आ गये। उसने देखा कि विपत्ति टल गई है और उसकी सारी संपत्ति और लोग

सुरक्षित हैं। राजा प्रसन्न होकर सत्यव्रत के आचरण में लग गये और अपना सर्वस्व भगवान को अर्पण कर दिया। जो भी व्यक्ति इस कथा को ध्यान से सुनता है और सत्यनारायण जी की पूजा करता है उसे जीवन में किसी भी वस्तु की कमी नहीं होती

बोलिए सत्यनारायण भगवान की जय

pdfinbox.com